षष्ठम अध्याय

उपसंहार

उपसंहार

यहाँ शोध मंतव्य की अभिव्यक्ति के लिए भूमिका सहित क्रमिक विभाजन प्रस्तुत करके अध्ययन निष्कर्ष प्रकट करने का उद्देश्य है।

प्रथम अध्याय के अन्तर्गत 'उत्तर प्रदेश में समसामयिक चित्रण की पूर्व पीठिका' पर प्रकाश डाला है। किस तरह से उत्तर प्रदेश में हमारी भारतीय कला एवं सांस्कृतिक पृष्ठ-भूमि का उन्नयन हुआ और कौन-सी विभिन्न विधाओं, कला अवस्थाओं को दृढ़ता प्रदान हुई। इसके साथ ही साथ आक्रान्ताओं, पर्यटकों द्वारा भारत में विदेशी कला एवं संस्कृति का आधुनिक आदान-प्रदान सम्भव हुआ।

द्वितीय अध्याय में उत्तर प्रदेश की आधुनिक कला में ही क्रमिक समसामयिकता को अवसर मिलता गया जिसके अन्तर्गत बदली हुई मानसिकता, भावात्मकता के दर्शन कृतित्व में स्पष्ट रूप लेते गए। लखनऊ कला महाविद्यालय की स्थापना, उत्तर प्रदेश के प्रमुख कला आचार्यों का आधुनिक कला रूझान, कृतित्व को उजागर किया गया जो कि समसामयिक कला का पूर्ववर्ती रूप था।

तृतीय अध्याय में उत्तर प्रदेश की समसामयिक कला चेतना पर प्रकाश डाला है। बदलते समय, औद्योगीकरण, प्रचार माध्यमों से कला रूझान में बदलाव आया तथा इसके अन्तर्गत लखनऊ कला महाविद्यालय में 1965 से समसामयिक वैचारिकता में तेजी आई एवं वैचारिक आन्दोलन प्रारम्भ हुए। उत्तर प्रदेश राज्य ललित कला अकादमी की प्रदर्शिनियों का कला रूझान समकालीन प्रवृत्तियों की ओर बढ़ने लगा। इन प्रदर्शिनियों का परावर्तित प्रभाव ले किस तरह से उत्तर प्रदेश के नव चित्रकारों ने अपनी प्रादेशिक कला को राष्ट्रीय और विश्वस्तरीय उदीयमान किया।

चतुर्थ अध्याय के अन्तर्गत उत्तर प्रदेश की चित्रकला में समसामयिक तत्वों को उजागर किया गया है। विभिन्न स्थानों के क्षेत्रीय प्रभावों, परम्पराओं ने उत्तर प्रदेश की समसामयिक कला को बदला रूप प्रदान किया और उन्नति के शिखर

पर ला खड़ा किया। बढ़ते सूचना, प्रचार तंत्र के प्रभाव ने बाकी कमी भी पूरी कर दी। परिणामत: प्रान्तीय समसामयिक कला में अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय विभिन्न प्रभाव, तकनीकी मेल-मिलाप रहा बढ़ा। विश्व परिदृश्य में कलाकार ने अपनी पहचान बनाने की चेष्टा शुरू की ओर समाज को लेकर एक मिला-जुला और नया रूप कला का साकार होता आया है।

पंचम अध्याय में उत्तर प्रदेश की समसामयिक चित्रकला की विशेषताओं पर प्रकाश डाला है। समकालीन क्रियाकलापों व विकास का रूप चित्रों में देखने को प्राप्त हुआ। 1965 से पूर्व की आधुनिक कला का सानिध्य लेते हुए अद्यतन कला की स्थिति समीक्षा की गयी है। यहाँ आकर अब चित्रकला में मानव मन की विशेष संवेदी स्थिति पर भी प्रकाश डालने का प्रयास किया है।

आज जिस प्रकार प्रत्येक मनुष्य दुनिया की हर सूचना रखता है उसी प्रकार कलाकार भी विश्व परिदृश्य से अपनी संवेदना जाग्रत करता है, वैचारिक सामग्री एकत्र कर अपनी चेतना से नये से नये माध्यम में, अपनी स्थानीयता के साथ स्वयं को व्यक्त करने की चेष्टा में रहता है। आज कलाकार के सामने समसामयिकी चित्रित करने के लिए विश्व के सांस्कृतिक अतीत का समृद्ध भण्डार है जिससे उत्तर प्रदेश का समसामयिक चित्रकार भी उन समृद्ध प्रवृत्तियों का धारक हो गया है।